æÈ ρπ ±ρπ ∑ ûæΩ, § ˜≠çæ† –, ∏ρ∑≤Γ∏

Ñª Ï

{ÏÔ∏ρ † ρφς ûæΩ ª¦ª ª φ∑ρπ ∑, ∏ρ∑≤Γ∏

ûæΩ ∂ ώæ∂ æπ ρø æ€ρÑI

http://www.igau.edu.in
http://www.igau.nic.in

(Project sponsored by IMD,MoES,New Delhi)

0771-2442557

Patron:Dr. S.K. Patil, Vice Chancellor *Director of Research Services: Dr. J.S. Urkurkar* *Prof. & Head(Agromet): Dr. G.K. Das*
Nodal Officer: Shri J.L. Chaudhary *Research Associate: Sanjay Bhelawe*

Advisory Committee: **Agrometeorology**- Dr.Harsh Vardhan Puranik, **Entomology**-Dr. Sanjay Sharma,
Horticulture-Dr. G.L Sharma; Dr.G.D.Sahu **Plant Pathology**- Dr. N.Lakpale, Dr. H.K. Singh, **Veg. Science**-Dr. G.L.Sharma,
Agronomy - Dr. H.L. Sonboir, **Animal Science** - Dr.(smt.) N. Kerketta, **FMP** – Er.S.V. Jogdand ,**SWE**-Er.V.M. Victor

वर्ष: 26, क्रमांक: 74 **दिनांक 15.09.2017**

विगत सप्ताह का मौसम:- लभांडी स्थित कृषि मौसम वेधशाला में दर्ज आंकड़ो के अनुसार विगत पाँच दिनो के दौरान 41.4 मी. मी. वर्षा दर्ज की गई है जो की सामान्य की तुलना में कम है, जून माह से अब तक 565.6 मि.मी वर्षा दर्ज की गई है जो की सामान्य की तुलना में कम है। सूर्य की तीव्र रोशनी की अवधि 1.2 से 6.4 घंटे के बीच दर्ज की गई। इस दौरान औसतन अधिकतम व न्यूनतम तापमान क्रमशः. 32.2 डि.से. (सामान्य से अधिक) तथा 24.9 डि.से. (सामान्य से अधिक) दर्ज किया गया है। इस दौरान हवा की औसत गति व वाष्पीकरण दर क्रमशः 3.2 कि.मी. प्रति घंटा व 3.3 मि.मी. प्रति दिन थी। प्रातः कालीन औसत आर्द्रता व मृदा का तापमान क्रमशः 93% व 27.2 डि°से° दर्ज की गई जबकि यह दोपहर में यह क्रमशः 77% व 34.4 डि°से° दर्ज की गई।

मौसमपूर्वानुमान:- भारत मौसम विज्ञान विभाग रायपुर द्वारा जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनो में छत्तीसगढ़ के अधिकांश क्षेत्रों में मध्यम से घने बादल छाए रहने एवं हल्की वर्षा होने की संभावना हैं। इस दौरान हवा में 80-95 प्रतिशत नमी होने की संभावना है। मैदानी क्षेत्रों मे अधिकतम तापमान लगभग 30-31°C रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान 24 से 26°C के बीच दर्ज किए जाने की संभावना है। आने वाले दिनो में हवा विभिन्न दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग 2-7 किलो मीटर/घंटा रहने कि संभावना है।

क्षेत्राच्छादन:-संचालनालय कृषि, छत्तीसगढ़ रायपुर से प्राप्त साप्ताहिक प्रतिवेदन खरीफ 2017 दिनांक 11/09/2017 के अनुसार प्रदेश में खरीफ फसलों की लगभग 98% बोवाई का कार्य हो चुका है। जिसका फसलवार विवरण निम्नानुसार है।

अनाज	क्षेत्रफल (000 हे.)	दलहनी	क्षेत्रफल (000 हे.)	तिलहनी	क्षेत्रफल (000 हे.)	अन्य	क्षेत्रफल (000 हे.)
धान बोता	2584.61	अरहर	137.72	मूँगफली	58.30	रेशेदार एवं अन्य फ़सलें	127.67
धान	3672.91	मूंग	23.54	तिल	32.69		
मक्का	226.40	उड़द	161.66	सोयाबीन	131.54		
ज्वार	77.91	कुल्थी	20.96	रामतिल	32.69		
				सूरजमुखी	0.12		
योग अनाज	**3977.22 (100%)**	**योग दलहन**	**343.88 (90%)**	**योग तिलहनी**	**255.34 (82%)**	**महायोग**	**4704.11 (98%)**

मौसम आधारित कृषि सलाह

सामान्य

1. धान फसल नहीं लगाने की स्थिति में कुल्थी, मूंग, उड़द, तोरिया, मक्का, सूरजमुखी, सब्जी, एवं चारे वाली फसलों की बुवाई करें।
2. धान की फसल में माहू एवं तनाछेदक कीटों के लिए खेत में फसल की सतत निगरानी करें। जिन स्थानों पर तना छेदक की तितली 1 वर्ग मी. में एक से अधिक दिखाई दे रही हो वहां कार्बोफ्यूरॉन 33 कि.ग्रा. या फर्टेरा 10 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के दर से छिड़काव करें। खुला मौसम देखते हुए धान की फसल में निंदाई-गुडाई द्वारा निंदा नियंत्रण कि सलाह दी जाती है।

3. शीघ्र पकने वाली धान की फसल पुष्पन अवस्था में है, यदि उनमें 50 % पुष्पन हो चुका है, तो नत्रजन की तृतीय किश्त का छिडकाव करें।
4. भूरा माहो के नियमित प्रकोप वाले स्थानों पर फोरेट का इस्तेमाल न करें। कीट प्रकोप की तीव्रता होने पर इमिडाक्लोफ्रिड 125 मि.ली. या इथिप्रोल + इमिडाक्लोफ्रिड 150 मि. ली. दवा का उपयोग करें।
5. धान में तना छेदक कीट की निगरानी के लिए फिरोमेन ट्रेप 2-3 प्रति एकड़ का उपयोग करें एवं प्रकोप पाये जाने पर 8-10 फिरोमेन ट्रेप का उपयोग नियंत्रण के लिए करें।

फल एवं सब्जी

1. कद्दूवर्गीय सब्जियों विशेषकर परवल में फल सडन एवं सूखने की समस्या से बचाव हेतु खेतों में सफाई का ध्यान रखें और मेटालेक्सील + मैंन्कोजेब को 2.5 ग्राम प्रति लीटर या कापर आक्सिक्लोराइड (COC) 4 ग्राम प्रति लीटर की हिसाब से छिड़काव करें।
2. पपीते में फल झडन को रोकने हेतु 20 पी.पी.एम की दर से नैफ्थलिन एसीटीक एसीड (एन.ए.ए.) का छिड़काव करें।
3. जून में रोपित मुनगें की फसल एवं पीछले वर्ष रोपित आम के पौधों में सधाई हेतु कांट-छांट करें।
4. फलदार वृक्षों में कटाई-छटाई का कार्य पूर्ण कर लेवें।
5. मध्य कालीन फूलगोभी की रोपण तैयारी पूर्ण कर लें तथा रोपण पूर्व फफूंदनाशी एवं संर्वागी कीटनाशी से जड़ उपचारित अवश्य कर लें।

पशुपालन

1. अधिक संख्या में पशु बाड़े में न रखें। प्रत्येक पशु के लिए समुचित जगह की व्यवस्था रखें। एवं हवादार बाड़े बनायें।
2. उच्च तापमान एवं उमस के कारण पशुओ में डिहाईड्रेशन (निर्जलीकरण) की समस्या हो सकती हैं।
   अत: पशुओ को अधिक से अधिक पानी पिलाये। पानी में नमक मिलाये एवं पानी का बर्तन छायादार जगह में रखे।
3. सितम्बर माह में बकरियों भेड़ों को एंटोरोटोक्सीमिया नामक बीमारी का टीका अवश्य लगवा लें। बढते मेमनों को 6-10 सप्ताह की उम्र में इस बीमारी का टीका लगवाये।

आर. के .चंद्रवंशी
उप संचालक कृषि,
संचालनालय कृषि
छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर(छ.ग)

जे.एल.चौधरी
नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

डॉ.जी.के.दास
विभागाध्यक्ष
कृषि मौसम विज्ञान विभाग,
इ.गा.कृ.वि.वि रायपुर(छ.ग)